VICHAAR

विचार पत्रिका

संस्करण-24
सितम्बर 2015

वैदिक दर्शन, भारतीय इतिहास और संस्कृति...

स्वामी विरजानन्द जी की पुण्यतिथि (दिनांक 14 सितम्बर 2015) पर हम उन्हें स्मरण करते हैं।

स्वामी विरजानन्द जी (1778–1868) एक संस्कृत विद्वान, व्याकरण के दैदिप्यमान सूर्य और वेदोद्धारक स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के गुरू थे। इनको मथुरा के अंधे गुरू के नाम से भी जाना जाता हैं।

आस्था चैनल पर विचार के कार्यक्रमों के प्रसारण की अनुसूची सितम्बर 2015
प्रतिदिन रात्रि 9:30 से 10:00 बजे तक
(पुन : प्रसारण हर रोज आस्था भजन चैनल पर रात्रि 8:00 से 8:30 बजे तक)

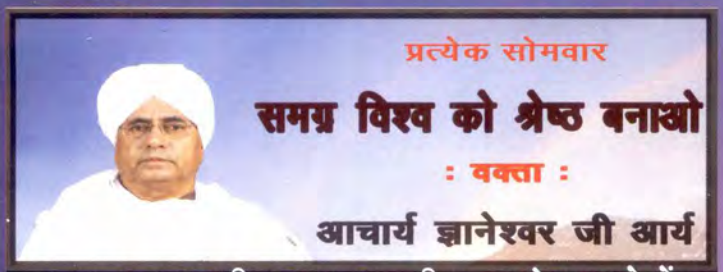

इसका प्रसारण दि. 07,14, 21 - सितम्बर को जरुर देखें

इसका प्रसारण दि. 01, 08,15, 22, 29 - सितम्बर को जरुर देखें

इसका प्रसारण दि. 02, 09, 23 - सितम्बर को जरुर देखें

इसका प्रसारण दि. 03,10 - सितम्बर को जरुर देखें

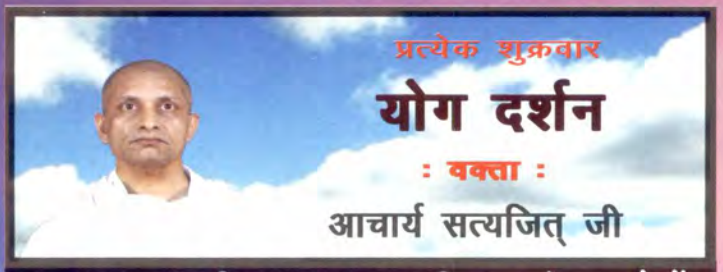

इसका प्रसारण दि. 04,11,18, 25 - सितम्बर को जरुर देखें

इसका प्रसारण दि. 05,12,19, 26 - सितम्बर को जरुर देखें

सितम्बर मास की विचार की विषेष प्रस्तुति

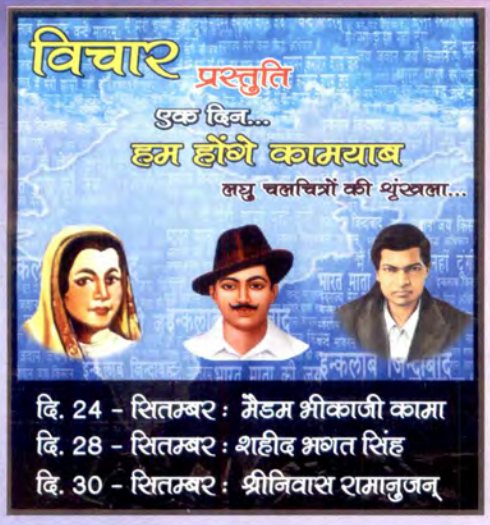

इसका प्रसारण दि. 06,13,20, 27 - सितम्बर को जरुर देखें

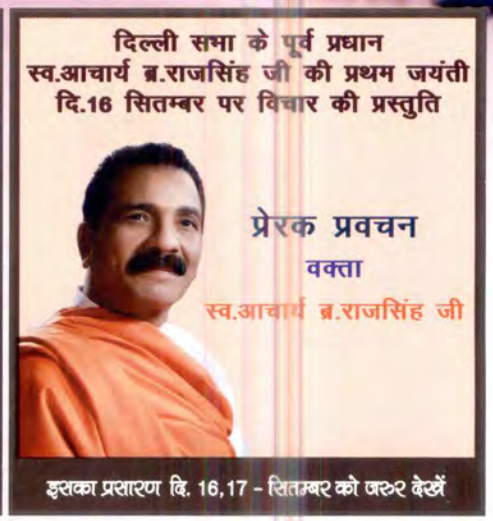

इसका प्रसारण दि. 16,17 - सितम्बर को जरुर देखें

: विशेष अनुरोध :

विचार द्वारा निर्मित कार्यक्रमों का दैनिक प्रसारण हर रोज रात्रि 9:30 बजे से आस्था चैनल पर चल रहा है। इसका पुनः प्रसारण हर रोज आस्था भजन चैनल पर भी रात्रि 8:00 से 8:30 बजे तक हो रहा है। इसमें अपना सौजन्य विज्ञापन सहयोग करने की भावना रखने वाले व्यक्ति या संस्था इसके विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए कृपया श्री धर्मेश आर्य (कार्यकारी निदेशक – विचार) से मो.नं. 07738070401 पर संपर्क कर सकते हैं।

विचार प्रस्तुति

VICHAAR

हिन्दी धारावाहिक

क्या लोग थे वो दीवाने !!

- श्री गोविन्दराम जी आर्य
- श्री लालमन जी आर्य
- पंडित फूलचन्द्र जी शर्मा "निडर"

इन तीनों फिल्मों की CD एवम् विचार द्वारा निर्मित अन्य सभी कार्यक्रमों की CD विक्रय हेतु विचार E Store में उपलब्ध है। इसे विचार की वेबसाइट www.vichaar.tv पर जाकर E Store से Online खरीद सकते हैं।

[illegible]

: शंका समाधान :

शंका : भगवान कण-कण में होता है? या कण-कण भगवान का है?

समाधान : जी हाँ। भगवान कण-कण में है। कोई कण मात्र भी स्थान ईश्वर से खाली नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक है। GOD IS OMNI PRESENT. दूसरी बात कण-कण भगवान का है? ये बात भी ठीक है। कण-कण का मालिक भगवान है। सारी दुनिया का मालिक एक है। इसमें भी कोई आपत्ति नहीं है। तीसरी बात। हो सकता है आप पूछना चाहते हों – क्या कण-कण ही भगवान है? इसका उत्तर है – जी नहीं। कण-कण भगवान नहीं है। भगवान अलग चीज है और ये कण-कण, Materials ये अलग चीज है, और तीसरी वस्तु है हम। आप और हम। हम हैं आत्मा। तो कुल मिलाकर तीन वस्तुएं हैं, जो सदा से हैं, सदा रहेंगी। कितनी वस्तुएं हैं? – तीन। पहली वस्तु ईश्वर, दूसरी जीवात्मा, तीसरी प्रकृति। तो प्रकृति को अंग्रेजी में Materials कहते हैं। जिसको आप Materials कहते हैं उसको हम प्रकृति कहते हैं। तो वेद आदि शास्त्रों के अनुसार ये तीन वस्तुएं अनादि हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेदों के आधार पर इस त्रैतवाद को सिद्ध किया है।

– स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

पंजीकृत डाक पुस्तकें

प्रति

प्रेषक

विचार टेलीविजन नेटवर्क लि.

[illegible]

VicharTv Vlal

[illegible]